International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 108-114
www.educationjournal.info
Received: 18-07-2023
Accepted: 25-08-2023

Ravi Pratap Singh
Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

Dr. Shweta Singh
Associate Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Ravi Pratap Singh
Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा प्रणाली में योगदान

Ravi Pratap Singh and Dr. Shweta Singh

सारांश
यह शोध पेपर स्वामी विवेकानंद के शिक्षा प्रणाली में उनके योगदान को अध्ययन करता है। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन में शिक्षा को एक माध्यम के रूप में देखा, जिससे व्यक्ति अपनी स्वाभाविक प्रकृति को पहचान सके और अपने सामाजिक दायित्वों का समर्थन कर सके। इस शोध पेपर में, हम स्वामी विवेकानंद के विचारों, उनकी शिक्षा प्रणाली के मूल तत्वों, और उनके योगदान के महत्व को विश्लेषण करते हैं। उन्होंने योग, ध्यान, और सेवा के माध्यम से अध्ययन और स्वयं विकास को प्रोत्साहित किया। इस शोध पेपर का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के शिक्षा प्रणाली में उनके अद्वितीय योगदान को समझना है और उसके माध्यम से आज के समाज में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के विचारों को प्रोत्साहित करना है।

कूटशब्द: स्वामी विवेकानंद, योगदान, शिक्षा, समाज

प्रस्तावना
स्वामी विवेकानन्द का जन्म नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में हुआ, जो एक भारतीय हिंदू भिक्षु, दार्शनिक, लेखक, धार्मिक शिक्षक और भारतीय रहस्यवादी रामकृष्ण के मुख्य शिष्य थे। वह पश्चिमी दुनिया में वेदांत और योग की शुरूआत में एक प्रमुख व्यक्ति थे, और आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के जनक थे, जिन्हें अंतरधार्मिक जागरूकता बढ़ाने और हिंदू धर्म को एक प्रमुख विश्व धर्म की स्थिति में लाने का श्रेय दिया जाता है।
कलकत्ता में एक कुलीन बंगाली कायस्थ परिवार में जन्मे विवेकानन्द का झुकाव छोटी उम्र से ही धर्म और आध्यात्मिकता की ओर था। बाद में उन्हें अपने गुरु रामकृष्ण मिले और वे भिक्षु बन गये। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद, विवेकानन्द ने तत्कालीन ब्रिटिश भारत में भारतीय लोगों की जीवन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के लिए बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया।
उनकी दुर्दशा से प्रभावित होकर, उन्होंने अपने देशवासियों की मदद करने का संकल्प लिया और संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करने का रास्ता ढूंढा, जहां 1893 में शिकागो में धर्म संसद के बाद वह एक लोकप्रिय व्यक्ति बन गए, जिसमें उन्होंने अपना प्रसिद्ध भाषण इन शब्दों से शुरू किया: बहनों और अमेरिका के भाइयों...अमेरिकियों को हिंदू धर्म से परिचित कराते हुए। वह संसद में इतने प्रभावशाली थे कि एक अमेरिकी समाचार पत्र ने उन्हें "ईश्वरीय अधिकार से एक वक्ता और निस्संदेह संसद में सबसे महान व्यक्ति" के रूप में वर्णित किया।
संसद में बड़ी सफलता के बाद, बाद के वर्षों में, विवेकानंद ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के मूल सिद्धांतों का प्रसार करते हुए सैकड़ों व्याख्यान दिए, और न्यूयॉर्क की वेदांत सोसाइटी और सैन फ्रांसिस्को की वेदांत सोसाइटी की स्थापना की (अब उत्तरी कैलिफोर्निया की वेदांत सोसायटी),

ये दोनों पश्चिम में वेदांत सोसायटी की नींव बन गईं। भारत में, विवेकानन्द ने रामकृष्ण मठ की स्थापना की, जो मठवासियों और गृहस्थ भक्तों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रदान करता है, और रामकृष्ण मिशन, जो दान, सामाजिक कार्य और शिक्षा प्रदान करता है।

विवेकानन्द अपने समकालीन भारत के सबसे प्रभावशाली दार्शनिकों और समाज सुधारकों में से एक थे, और पश्चिमी दुनिया में वेदांत के सबसे सफल मिशनरियों में से एक थे। वह समकालीन हिंदू सुधार आंदोलनों में भी एक प्रमुख शक्ति थे और उन्होंने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा में योगदान दिया। अब उन्हें व्यापक रूप से आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक और देशभक्त संत माना जाता है। भारत में उनका जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है

शिक्षा का अर्थ

विवेकानन्द ने कहा: "वह शिक्षा जो आम जनता को जीवन के संघर्ष के लिए तैयार होने में मदद नहीं करती, जो चरित्र की ताकत, परोपकार की भावना और शेर का साहस नहीं लाती - क्या वह शिक्षा सार्थक है? वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम बनाती है। शिक्षा को 'जीवन-निर्माण, मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण विचारों का समावेश' प्रदान करना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा का आदर्श एक एकीकृत व्यक्ति का निर्माण करना होगा।

शिक्षा के प्रकार

विवेकानन्द ने शिक्षा की समग्र प्रणाली का वर्णन किया। जिसका प्रभाव शिक्षा के हर पहलू पर पड़ता है। एक महान राष्ट्र की स्थापना के लिए हमें एक उत्तम शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, जो हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करे। एक महान राष्ट्र की स्थापना के लिए उन्होंने शिक्षा प्रणाली में विभिन्न प्रकार की शिक्षा को शामिल किया। ये हैं:

1. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में शारीरिक शिक्षा, विवेकानन्द ने पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा पर बहुत जोर दिया। उनका मानना था कि सारी शिक्षा और प्रशिक्षण मनुष्य-निर्माण वाली होनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य हमेशा समाज में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। सभी जानते हैं कि शरीर को मजबूत बनाने के लिए हमें शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। उनका मानना था कि रोजमर्रा की जिंदगी में शारीरिक व्यायाम सबसे महत्वपूर्ण है। शक्ति ही जीवन है और कमजोरी ही मृत्यु है। क्योंकि हमें ताकत और शक्ति की आवश्यकता है, शारीरिक शिक्षा विशेष रूप से प्रत्येक युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे, यह इक्कीसवीं सदी की शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है क्योंकि शारीरिक शिक्षा के ज्ञान के बिना चरित्र निर्माण और आत्मबोध संभव नहीं है। यदि हम अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं तो हमें शारीरिक शिक्षा सीखनी होगी और इसे अपनी दैनिक जीवन गतिविधि में लागू करना होगा या इसे अपनी रोजमर्रा की गतिविधि का अभिन्न अंग बनाना होगा।
2. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में धार्मिक और नैतिक शिक्षा हमारी नैतिकता और आध्यात्मिक ज्ञान को विकसित करने के लिए हमें अपने पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को शामिल करने की आवश्यकता है। हमारे दैनिक जीवन में इस प्रकार की शिक्षा सर्वाधिक प्रभावशाली होती है। विवेकानन्द सदैव सार्वभौमिकता और आध्यात्मिक भाईचारे में विश्वास करते थे। वे वेदान्त दर्शन पर बहुत जोर देते थे। उन्होंने वेदांत को अत्यंत व्यावहारिक धर्म बताया। वेदांत की शिक्षा को दैनिक जीवन में लागू किया जाना चाहिए। उन्हें विभिन्न धर्मों के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं मिला। इसलिए वह सार्वभौम धर्म का सुझाव देते हैं। उनका मानना था कि धर्म शिक्षा का मूल है। धार्मिक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह धर्म और विज्ञान का संश्लेषण है। धार्मिक व्यक्ति को ज्ञान के सत्य तथ्य को जानने के लिए सदैव उत्सुक रहना चाहिए। वर्तमान समय में हमें विज्ञान और धर्म दोनों की आवश्यकता है। उनका धार्मिक दृष्टिकोण यह था कि ईश्वर में विश्वास करने से पहले प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास करने की आवश्यकता है। धार्मिक शिक्षा का अर्थ है कि वह किसी विशेष धर्म के बारे में पढ़ाने पर जोर नहीं देता। धार्मिक शिक्षा हमेशा शिक्षार्थियों के बीच नैतिक मूल्यों को विकसित करने और यह एहसास दिलाने में सक्षम होती है कि सभी मनुष्य एक समान हैं। अच्छे और बुरे के बीच अंतर को समझने में सक्षम बनाना। इस संबंध में नैतिक शिक्षा बहुत प्रभाव डालती है।
3. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में विज्ञान शिक्षा स्वामी विवेकानन्द विज्ञान शिक्षा पर जोर देते थे। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामाजिक जीवन में वैज्ञानिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। उन्होंने भौतिकी, जैविक विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी पर जोर दिया। वह हमेशा ज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे

अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी विज्ञान को संश्लेषित करने का प्रयास करते हैं। विज्ञान शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी समाज के सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जायेगा।

4. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में जन शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द ने आग्रहपूर्वक सार्वभौमिक जन शिक्षा को बढ़ाने की वकालत की क्योंकि वास्तविक भारत उनकी कुटियाओं में रहता है। उन्होंने हर जगह मानवीय व्यक्तित्व का सम्मान किया और सभी के लिए स्वतंत्रता की वकालत की। उनका मानना था कि, प्रत्येक मानस संभावित रूप से पवित्र है। हमें बाहरी और आंतरिक प्रकृति पर नियंत्रण करके इस पवित्रता को प्रकट करने की आवश्यकता है। यदि हमें अपने देश में वांछनीय सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता है, तो सामूहिक शिक्षा की आवश्यकता है। विवेकानन्द के अनुसार 'शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह जैविक, सामाजिक, आर्थिक आध्यात्मिक आवश्यकता है। वह जनता की गरीबी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने महसूस किया कि इस देश के कई लोग भुखमरी और अज्ञानता में रहते हैं, उन्हें समाज की मुख्य धारा में रहने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। राष्ट्रीय विकास शिक्षा की उन्नति पर निर्भर करता है, इसलिए हमें जितनी जल्दी हो सके जनता के बीच शिक्षा का प्रसार करना होगा। जन शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने का न्यूनतम ज्ञान प्राप्त होगा।
5. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में मानव निर्माण शिक्षा मूल रूप से मानव निर्माण शिक्षा का मुख्य तत्व स्वामी विवेकानन्द का वेदांतिक जीवन दर्शन था। स्वामी विवेकानन्द मनुष्य निर्माण की शिक्षा की अवधारणा देते हैं जो समाज के साथ-साथ व्यक्तियों में भी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मनुष्य निर्माण शिक्षा का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास। मानव निर्माण शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में सद्भाव, आत्मसात, सहायता और शांति के गुणों का विकास होगा। यह एक अंतर्निहित चरित्र विकास प्रक्रिया के साथ-साथ व्यावसायिक विकास भी है। मनुष्य निर्माण शिक्षा हाल के समय में सामने आई कई समस्याओं का समाधान करती है। इस शिक्षा से मनुष्य समाज के योग्य बनेगा।
6. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में महिला शिक्षा, विवेकानन्द ने महिलाओं की शिक्षा और उनकी मुक्ति की वकालत की। वह अमेरिका, इंग्लैंड, जापान जैसे प्रगतिशील देशों की महिलाओं को पुरुषों के साथ काम करते हुए और राष्ट्रीय उन्नति में जबरदस्त योगदान देते हुए देखकर बहुत प्रभावित हुए। वे भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति से बहुत दुखी थे। उनका मानना था कि एक राष्ट्र तभी विकसित होगा जब महिलाओं को उचित सम्मान दिया जाएगा और उनका दर्जा बढ़ाया जाएगा। उन्होंने महिला शिक्षा पर जोर दिया क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि महिला शिक्षा के बिना कोई भी परिवार या देश आगे नहीं बढ़ सकता,
7. इसलिए सबसे पहले उन्हें ऊपर उठना होगा. स्वामी विवेकानन्द नारी को शक्ति का अवतार मानते थे, जो ब्रह्माण्ड की आदिम ऊर्जा है। किसी राष्ट्र के निर्माण या राष्ट्र के विकास में पुरुष और महिला का समान या समान योगदान होता है। इसलिए, किसी राष्ट्र के विकास के लिए महिलाओं की शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पुरुषों की, अंतर यह है कि उनकी पर्याप्त और बौद्धिक संरचना और उनकी सामाजिक भूमिकाओं में अंतर को देखते हुए उन्हें अलग तरह से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है। उन्होंने महसूस किया कि यदि भारतीय महिलाओं को इस देश में उचित शिक्षा और उच्च सम्मानित स्थान दिया जाए, तो राष्ट्र आगे बढ़ेगा। उनका सुझाव है कि, लड़कियों को निस्वार्थता के ऊंचे सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता से भरने के लिए हमेशा सर्वश्रेष्ठ पात्रों को उनके सामने पेश किया जाना चाहिए।
8. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में व्यावसायिक/तकनीकी शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द एक संतुलित भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का सुझाव देते हैं, जो मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती हो। शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा अवश्य शामिल होनी चाहिए। स्वामीजी का मानना था कि अपने उद्योग को विकसित करने के लिए हमें तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है, जो हमारे देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था का विकास करेगी। और हर व्यक्ति पैसा कमाने से स्वतंत्र होगा। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से हम अपने आवश्यक उत्पाद का उत्पादन अपने देश में ही करते हैं। विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कार्य हमारे पाठ्यक्रम का हिस्सा होने चाहिए।

9. शिक्षा प्रणाली के एक भाग के रूप में मातृभाषा स्वामीजी के अनुसार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को मातृभाषा द्वारा क्रियान्वित किया जाना चाहिए। वे पश्चिमी भाषा और ज्ञान पर भी विश्वास करते थे। पश्चिमी विषय या ज्ञान का कार्यान्वयन अंग्रेजी भाषा द्वारा किया जा सकता है। सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम संस्कृत भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन हम हमेशा मातृभाषा को पहले मानते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार समस्त शिक्षा और समस्त प्रशिक्षण का अंतिम उद्देश्य मनुष्य-निर्माण है और वे शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य भी सुझाते हैं।

1. आत्म-विश्वास और आत्म-बोध का निर्माण

मनुष्य के पास एक अमर आत्मा है जो अनंत शक्ति का खजाना है। अत: मनुष्य को स्वयं पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए और अपने जीवन के उच्चतम लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए, आत्मविश्वास आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है। स्वामीजी के स्वयं के शब्दों में: "हममें विश्वास और भगवान में विश्वास - यही महानता का रहस्य है।" सही प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन पर पड़े अज्ञान के आवरण को हटाना और हमें यह समझाना होना चाहिए कि हम वास्तव में क्या हैं।

2. चरित्र का निर्माण

चरित्र मनुष्य की प्रवृत्तियों का समुच्चय है, उसके मन की प्रवृत्तियों का समुच्चय है। हम वही हैं जो हमें हमारे विचारों ने बनाया है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन की बुरी प्रवृत्तियों को दूर करना होना चाहिए। स्वामीजी ने कहा, "हम वह शिक्षा चाहते हैं, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।" शिक्षा को चरित्र का निर्माण करना चाहिए और हमारे वास्तविक स्वरूप को प्रकट करना चाहिए।

3. व्यक्तित्व का विकास

व्यक्तित्व वह प्रभाव, प्रभाव है जो एक व्यक्ति दूसरे पर बनाता है। मनुष्य का व्यक्तित्व ही मायने रखता है। "विवेकानंद के अनुसार, वास्तविक मनुष्य को बनाने में व्यक्तित्व दो-तिहाई और उसकी बुद्धि और शब्द केवल एक-तिहाई होते हैं।" सारी शिक्षा और सारे प्रशिक्षण का आदर्श यही मनुष्य-निर्माण होना चाहिए।

4. मन की सेवा

शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य मनुष्य में ईश्वर की सेवा करना है। बीमारों, गरीबों, दुखी लोगों, अज्ञानियों और वंचितों में ईश्वर ही हैं जिनकी हमें पूजा करनी चाहिए। स्वामीजी के स्वयं के शब्दों में, "यदि आप ईश्वर को पाना चाहते हैं, तो मनुष्य की सेवा करें।" उन्हें अपने देशवासियों की अत्यंत गरीबी देखकर दुख होता था। इसलिए, वह चाहते थे कि शिक्षा हर किसी को अपने पैरों पर खड़ा होने और अपनी प्राथमिक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाए।

5. सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा देना

स्वामी विवेकानन्द का मानव जाति के प्रति प्रेम कोई भौगोलिक सीमा नहीं जानता था। उन्होंने हमेशा सभी देशों के बीच सद्भाव और अच्छे संबंधों की वकालत की। उन्होंने कहा, 'शिक्षा के माध्यम से हमें धीरे-धीरे अलगाव और असमानता की दीवारों को गिराकर सार्वभौमिक भाईचारे के विचार तक पहुंचना चाहिए।' प्रत्येक मनुष्य में, प्रत्येक जानवर में, चाहे वह कितना भी कमजोर या दुखी, बड़ा या छोटा, एक ही सर्वव्यापी और सर्वज्ञ आत्मा का निवास है। अंतर आत्मा में नहीं, अभिव्यक्ति में है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति में इस शक्ति को विकसित करना चाहिए और इसे इस हद तक विस्तारित करना चाहिए कि यह पूरी दुनिया को कवर कर सके।

6. जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखने का उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा की किसी भी योजना में जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। तभी व्यक्ति को आत्मनिर्भर और देश को समृद्ध बनाना संभव होगा। स्वामीजी ने कहा: "केवल महान सिद्धांतों को सुनने से काम नहीं चलेगा। आपको उन्हें व्यावहारिक क्षेत्र में लागू करना होगा, निरंतर अभ्यास में बदलना होगा।" इसलिए उन्होंने कृषि और अन्य व्यावहारिक कलाओं में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है।

7. शारीरिक एवं मानसिक विकास का उद्देश्य

शिक्षा का दूसरा उद्देश्य यह है कि बच्चा कल के एक निडर और शारीरिक रूप से विकसित नागरिक के रूप में राष्ट्रीय विकास और उन्नति को बढ़ावा देने में सक्षम हो। बच्चे के मानसिक विकास पर बल देते हुए स्वामीजी ने कामना की कि शिक्षा से बच्चा दूसरों के लिए परजीवी बनने के बजाय आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

8. नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार किसी राष्ट्र की महानता न केवल उसकी संसदीय संस्थाओं और गतिविधियों से मापी जाती है, बल्कि उसके नागरिकों की महानता से भी मापी जाती है। लेकिन नागरिकों की महानता उनके नैतिक और आध्यात्मिक विकास से ही संभव है जिसे शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

9. विविधता में एकता की खोज का उद्देश्य

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तियों में अंतर्दृष्टि विकसित करना है ताकि वे विविधता में एकता की खोज और एहसास कर सकें। स्वामी विवेकानन्द ने आगे कहा है कि भौतिक और आध्यात्मिक संसार एक हैं; उनकी विशिष्टता एक भ्रम (माया) है। शिक्षा को इस भावना का विकास करना चाहिए जो विविधता में एकता को खोजे।

10. धार्मिक विकास का उद्देश्य

स्वामीजी के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर निहित धार्मिक बीज को खोजने और विकसित करने में सक्षम होना चाहिए और इस प्रकार पूर्ण सत्य या वास्तविकता को खोजना चाहिए। इसलिए उन्होंने भावनाओं और भावनाओं के प्रशिक्षण की वकालत की ताकि पूरा जीवन शुद्ध और उदात्त हो जाए। तभी, व्यक्ति में महान संतों और उद्धारकों की शिक्षाओं और उपदेशों के प्रति आज्ञाकारिता, समाज सेवा और समर्पण की क्षमता विकसित होगी। शिक्षा को इस विकास को बढ़ावा देना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द और भारतीय शिक्षा प्रणाली में उनका योगदान

12 जनवरी को, भारत राष्ट्रीय युवा दिवस मनाता है और इस प्रकार भारत भारत के महान देशभक्त भविष्यवक्ता 'स्वामी विवेकानन्द' को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि देता है। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में हुआ था। और आज स्वामी विवेकानन्द की 154वीं जयंती है। वह न केवल एक समाज सुधारक थे बल्कि एक शिक्षक भी थे। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान सर्वोच्च महत्व का है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा में जीवन के सभी पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए - भौतिक, शारीरिक, नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक, क्योंकि शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है। उनके लिए, शिक्षा को 'मानव में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति' के रूप में परिभाषित किया गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा का उद्देश्य मानव मन में सुधार करना होना चाहिए; यह मस्तिष्क में कुछ तथ्य भरने के लिए नहीं होना चाहिए। शिक्षा जीवन की तैयारी होनी चाहिए।

उन्होंने एक बार कहा था कि "शिक्षा वह जानकारी की मात्रा नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाल दी जाती है और जीवन भर बिना पचे ही हंगामा मचाती रहती है। हमें जीवन-निर्माण, मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण, विचारों को आत्मसात करना होगा। यदि आपने पाँच विचारों को आत्मसात कर लिया है और उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना लिया है, तो आपके पास किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है, जिसने पूरी लाइब्रेरी को कंठस्थ कर लिया है। यदि शिक्षा जानकारी के समान होती, तो पुस्तकालय दुनिया के सबसे महान ऋषि होते और विश्वकोश ऋषि होते।

विवेकानन्द ने प्रचारित किया कि हिंदू धर्म का सार आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन में सर्वोत्तम रूप से व्यक्त किया गया था। और इस प्रकार, आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए स्वामी विवेकानन्द शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ध्यान और एकाग्रता पर अधिकतम जोर देना चाहते थे।

सामान्य शिक्षा के अभ्यास में, जैसा कि योग के अभ्यास में होता है, पाँच मूलभूत तत्व आवश्यक रूप से शामिल होते हैं- उद्देश्य, विधि, विषय, सिखाया गया और शिक्षक। वह इस तथ्य के प्रति आश्वस्त थे कि ध्यान और एकाग्रता का अभ्यास करके, मानव मस्तिष्क के सभी ज्ञान का भी अभ्यास किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को पुनः दिशा देकर समाज की बुराइयों को दूर करना चाहते थे। इस परिवर्तन के लिए उन्होंने शिक्षा को एक सशक्त हथियार के रूप में बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द न केवल एक समाज सुधारक थे, बल्कि एक शिक्षक, एक महान वेदांत प्रचारक, भारत के देशभक्त पैगम्बर भी थे, जिनका जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था, जिन्होंने देश के सामाजिक और सांस्कृतिक सद्भाव को आधुनिक बनाने की कोशिश की थी। आधुनिक भारत के जागरण में उनका योगदान अपने प्रकार और गुणवत्ता में आलोचनात्मक है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वह शिक्षा को 'मानव में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति' के रूप में परिभाषित करते हैं। उनके अनुसार शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है; इसमें जीवन के सभी पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए -

शारीरिक, भौतिक, बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक। आधुनिकीकरण के प्रति उनका दृष्टिकोण यह है कि कुछ भी करने से पहले जनता को शिक्षित किया जाना चाहिए।

उन्होंने भारत के लोगों को यह समझाने की कोशिश की कि राजनीतिक और सामाजिक ताकत की नींव सांस्कृतिक ताकत पर होनी चाहिए। उनके पास भारत के सांस्कृतिक संदर्भ में शिक्षा दर्शन का सच्चा दृष्टिकोण है। उनके शैक्षिक चिंतन का आज बहुत महत्व है क्योंकि आधुनिक शिक्षा का मानव जीवन के मूल्यों से बहुत अधिक संबंध समाप्त हो गया है। इसलिए, उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा मस्तिष्क में कुछ तथ्य ठूंसने के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य मानव मस्तिष्क को सुधारना होना चाहिए।

उनके लिए सच्ची शिक्षा कैरियर के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए योगदान के लिए थी। महान धार्मिक संत और समाज सुधारक की मृत्यु 1902 में हुई जब वह केवल 39 वर्ष के थे। वह अब नहीं रहे लेकिन इस धरती पर उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। उनके मिशन और उनके उपदेश आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहेंगे।

उपसंहार: स्वामी विवेकानंद का शिक्षा प्रणाली में योगदान का महत्वपूर्ण संक्षेप आकलन करते हुए, हम उनके विचारों और योगदान को समझ सकते हैं। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन के दौरान शिक्षा को व्यक्तिगत विकास का माध्यम माना और उसे एक समाज के समृद्धि और समानता की ओर अग्रसर करने का साधन माना। उनकी शिक्षा प्रणाली में योगदान का मुख्य आधार व्यक्तिगत विकास और सामाजिक समानता पर ध्यान देना था। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को एक ऐसे साधन के रूप में देखा जिससे व्यक्ति अपनी स्वाभाविक प्रकृति को पहचान सके और अपने सामाजिक दायित्वों का समर्थन कर सके। उनका योगदान शिक्षा प्रणाली को ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का सम्मान देने के लिए था।

विवेकानंद ने शिक्षा को एक पूर्णता की अवस्था के रूप में देखा, जिसमें शरीर, मन, और आत्मा के संतुलन का विकास होता है। उन्होंने योग, ध्यान, और सेवा के माध्यम से अध्ययन और स्वयं विकास को प्रोत्साहित किया। स्वामी विवेकानंद का शिक्षा प्रणाली में योगदान आज भी हमें एक समृद्ध, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन की दिशा में मार्गदर्शन करता है। उनकी शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य अकेले ज्ञान को ही नहीं है, बल्कि समृद्ध, संवेदनशील और सहयोगी समाज की भावना को भी समर्थ बनाना है।

सन्दर्भ

1. संबाशिवराव, राचुमल्लू। (2023) । अब समय आ गया है कि भारतीय दार्शनिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ाया जाए। आठवीं. 2021-2022.
2. अंसारी, करीम, पाल, इंद्रनील, सूत्रधार, सुकृति। (2023) । बेहतर भविष्य के आग्रह के लिए: महान शिक्षकों पर एक अध्ययन। 8. 2023-2025.
3. बेकरलेज, ग्विलीम। (2023) । मानव-निर्माण, राष्ट्र-निर्माण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण: आरएसएस और विवेकानन्द केन्द्र का संलग्न हिंदुत्व। धर्म अध्ययन जर्नल. 6. 1-17. 10.1007/एस42240-023-00139-8।
4. एच एम, चन्नाबसवैया। (2023) । "विवेकानंद के विचारों पर आधारित वर्तमान परिदृश्य में एक शिक्षक की भूमिका"। सभी अनुसंधान शिक्षा और वैज्ञानिक तरीकों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 11. 1321-1322. 10.56025/IJARESM.2023.118231322.
5. बेकरलेज, ग्विलीम। (2023) । एक धर्म "सिद्धांतों पर आधारित है, व्यक्तियों पर नहीं": स्वामी विवेकानन्द के वेदांत के प्रचार की "रणनीतिक अनुकूलता" का मूल? हिंदू अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 27. 10.1007/s11407-022-09331-0.
6. रॉय, कविता, स्वर्गियरी, ख्रीतीश। (2022) । शिक्षा (भारत में तब और अब)। 10.5281/ज़ेनोडो.7338874.
7. रजनी, डॉ. (2021) । भारत में प्राथमिक शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: एक नज़र में। 7. 124-129.
8. सी.वी., सिंधुजा, अशोक, होन्नदेवस्थान। (2021) । भारत में शिक्षा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। 10. 47-64.
9. महाराज, अयोन. (2020) । शिवज्ञाने जीवेर सेवा: श्री रामकृष्ण के प्रकाश में स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदांत का पुनर्परीक्षण। धर्म अध्ययन जर्नल. 2. 10.1007/s42240-019-00046-x.
10. दत्ता, सुभादीप। (2019) । शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का आत्मनिरीक्षण: 24 परगना, पश्चिम बंगाल, भारत पर आधारित एक अध्ययन। प्रारंभिक बचपन शिक्षा में उभरते मुद्दों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 1. 111-120. 10.31098/इजीस। v1i2.35.
11. शांति, डॉ. (2019) । शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण। 6. 598-602.
12. बायर, कार्ल। (2019) । स्वामी विवेकानन्द.हिन्दू धर्म सुधार, राष्ट्रवाद और वैज्ञानिक योग. समकालीन समाज में धर्म और परिवर्तन के लिए अंतःविषय जर्नल। 5. 230-257. 10.30965/23642807-00501012।

13. यादव, उर्मिला. (2018) । प्राचीन एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन। शिक्षा, स्थिरता, समाज। 01-03. 10.26480/ess.01.2018.01.03.
14. राय, स्वाति। (2018) । भारतीय शिक्षा प्रणाली: सिस्टर निवेदिता द्वारा एक व्यापक विश्लेषण। लोग: सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 4. 17-26. 10.20319/pijss.2018.42.1726.
15. सिंधुजा, सुश्री, मुरुगन, डॉ. (2017) । महिला शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचार।